Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi misc.
B 11

13.D.58. Hindi misc. B 11

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Padya-saingraha.

Pad Lingaruka

पद्यसङ्ग्रह

जोकि

अवध देशीय देहाती पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये
श्रीयुत मुन्शी हनुमान प्रसाद साहिब डेप्यूटी इन्स्पेक्टर
मदारिस ज़िलअ़ लखनऊ के इल्तिमास से रचा गया

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिकारी
श्रीयुत नव्वाब लेफ्टिनेण्ट गवर्नर बहादुर की

आज्ञानुसार

श्रीमद्विद्यासम्पन्न श्रीसाहिब डैरेक्टर बहादुर
आफ़ पबलिक् इन्स्ट्रक्शन् पश्चिमोत्तर व अवध देशीय की

अनुमति से

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के पाषाण यन्त्रालय में छपा॥

मार्च

सन् १८७८ ई०

श्री गणेशाय नमः

तुलसी दास जी की कविता

चौपाई

सावधान कर मन पुनि शंकर । लागे कहन कथा अति सुंदर
बार बार प्रभु चहत उठावा । प्रेम मगन तेहि उठत न भावा
प्रभु पद पंकज कपि कर शीशा । सुमिरि सो दशा मगन गौरीशा
कपि उठाय प्रभु हृदय लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा
कहु कपि रावण पालित लंका । केहि विधि दहेउ दुर्ग अतिबंका
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोले वचन विगत अभिमाना
शाखा मृग के बड़ि मनसादू । शाखा ते शाखा पर जादू ॥
नांघि सिंधु हाटक पुर जारा । निशिचर गण वधि विपिन उजारा
सो सब तव प्रताप रघुरादू ॥ । नाथ न कछुक मोरि मनसादू

दोहा ताकह प्रभु कछु अगम नहिं जापर तुम अनुकूल
तव प्रताप बडवा नलहि जारि सकै खल तूल ॥

सुनत वचन प्रभु बहु सुख माना । मन क्रम वचन दास निज जाना
मांगु वचन सुत वर अनुकूला । देउं आजु तुम कहं सुख मूला
नाथ भक्ति तव सुख दायिनी । देहु कृपा करि शिव मन भावनी
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एव मस्तु तव कहेउ भवानी ।

उमा राम सुभाव जिन्ह जाना। ताहि भजन तजि भावन आना
यह संवाद जासु उर आवा। रघुपति चरण भक्ति तेइ पावा
सुनि प्रभु वचन कहैं कपिवृंदा। जय जय जय कृपाल सुखकंदा
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा। कहा चलन कर करहु बनावा
अब विलम्ब केहि कारण कीजै। तुरत कपिन कहं आयसु दीजै
कौतुक देखि सुमन बहु वर्षे। नभ ते भवन चले सुर हर्षे॥

दोहा कपिपति बेग बोलायऊ आये यूथप यूथ
नाना वरण अतुल बल वानर भालु बरूथ

प्रभु पद पंकज नावहिं शीशा। गरजहिं भालु महा बल कीशा
देखा राम सकल कपिसेना। चितव कृपा करि राजिवनयना
राम कृपा बल पाय कपिंदा। भये पच्छ युत मनहुं गिरिंदा
हर्षि राम तब कीन्ह पयाना। शकुन भये सुंदर सुख नाना
जासु सकल मंगल मयनीती। तासु पयान शकुन यह नीती
प्रभु पयान जाना बैदेही॥। फरके वाम अंग शुभ तेही
जो जो शकुन जान किहि होई। अशकुन भयउ रावणहि सोई
चला कटक को बरनै पारा। गरजहिं वानर भालु अपारा
नख आयुध गिरि पाद पधारी। चले गगन मह इच्छा चारी
केहरि नाद भालु कपि करहीं। डगमगाहि दिग्गज चिक्करहीं

छंद॰ चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खर भरे
मन हरष दिन कर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे
कट कटहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटि न धावहीं

जय राम प्रबल प्रताप कोशल नाथ गुण गण गावहीं
सक सहिन भार अपार अहि पति वार वार विमोहहीं
गहि दशन पुनि पुनि कमठ पीठि कठोर सो किमि सोहहीं
रघुवीर रुचिर पयान प्रस्थित जानि परम सुहावनी ॥
जनु कमठ खप्पर सर्प राज सो लिखत अविचल पावनी

दोहा यहि विधि जाय कृपानिधि उतरे सागर तीर ॥
जहं तहं लागे खान फल भालु विपुल कपि वीर

उहां निशाचर रहैं सशंका। । जब ते जारि गयो कपि लंका।
निज निज गृह सब करैं विचारा। नहिं निशिचर कुल केर उबारा।
जासु दूत बल वरणि न जाई। तेहि आये पुर कवन भलाई
अति सभीत सुनि पुरजन बानी मन्दोदरी हृदय अकुलानी।
रही जोरि कर पति पद लागी। बोली वचन नीति रस पागी।
कन्त कर्ष हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति चित हित धरहू
समुझत जासु दूत की करणी। श्रवहिं गर्भ रज नीचर घरणी
तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंथ जो चहहु भलाई
तव कुल कमल विपिन दुखदाई। सीता शीत निशा सम आई
सुनहु नाथ सीता विनु दीन्हें। हित न तुम्हार शंभु अज कीन्हें

दोहा राम बाण अहि गण सरिस निकर निशाचर भेक
जब लगि ग्रासत तबहिं लगि यतन करहु तजि टेक

श्रवण सुनत शठ ताकरि बानी। विहंसा जगत विदित अभिमानी
समय सुभाव नारि कर सांचा। मंगल माहिं अमंगल राचा

जो आवै मर्कट कट कार्दू॥ । जिय हिं विचारे निशिचर खार्दू
कंपहिं लोकप जाके त्रासा॥ । तासु नारि सभीत बड़ि हासा।
अस कहि विहंसि ताहि उर लार्दू। चलेउ सभा ममता अधिकार्दू
मन्दोदरी हृदय कर चिंता। । भयो कंथ पर विधि विपरीता।
बैठेउ सभा खबरि अस पार्दू। सिंधु पार सेना सब आर्दू॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहऊ। ते सब हंसे मौन करि रहऊ॥
जितेउ सुरासुर तब श्रम नाहीं। नर बानर केहि लेखे माहीं
दोहा सचिव वैद्य गुरु तीनि जो प्रिय बोलहिं भय आश
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेग हीं नाश ॥
सोइ रावण कहँ बनी सहार्दू। अस्तुति करहिं सुनाय सुनार्दू
अवसर जानि विभीषण आवा। भ्राता चरण शीश तेहि नावा
पुनि शिर नाय बैठि निज आसन। बोला वचन पाइ अनुशासन
जो कृपाल पूछेहु मोहिं बाता। मति अनुरूप कहउं मैं ताता
जो आपन चाहो कल्याना । सुयश सुमति शुभ गति सुख नाना
तो पर नारि लिलार गोसार्दू। तजो चौथ चंदा की नार्दू॥
चौदह भवन एक पति होर्दू। भूत द्रोह तिष्ठै नहिं कोर्दू॥
गुण सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहै न कोऊ
दोहा काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक कर पंथ॥
सब परि हरि रघुवीर पद भजहु कहहिं सद ग्रंथ
तात राम नहिं नर भूपाला । भुवनेश्वर कालहु के काला
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। व्यापक अजित अनादि अनंता

गो द्विज धेनु देव हित कारी। कृपा सिंधु मानुष तनु धारी
जन रंजन भंजन खल भ्राता। वेद धर्म रक्षक सुर त्राता॥
ताहि बैर तजि नाइय माथा। प्रणतारति भंजन रघुनाथा
देहु नाथ प्रभु कहं बैदेही॥ भजहु राम बिनु काम सनेही
शरण गये प्रभु ताहु न त्यागा। विश्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा
जासु नाम त्रय ताप नशावन। सोइ प्रभु प्रगट समुझ जिय रावन

दोहा वार वार पद लागौं विनय करौं दश शीश॥
परि हरि मान मोह मद भजहु कोशला धीश
मुनि पुलस्त्य निज शिष्य सन कहि पठई यह बात
तुरत सो मैं तुम सन कही पाय सुअवसर तात

माल्यवंत अति सचिव सयाना। तासु वचन सुनि अति सुख माना
तात अनुज तव नीति विभूषण। सो उर धरहु जो कहत विभीषण
रिपु उत्कर्ष कहत शठ दोऊ॥ दूरि न करहु इहांते कोऊ॥
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी। कहेउ विभीषण पुनि कर जोरी
सुमति कुमति सब के उर रहई। नाथ पुराण निगम अस कहई
जहां सुमति तहं संपति नाना। जहां कुमति तहं विपति निदाना
तव उर कुमति बसी विपरीती। हित अनहित जानत रिपु प्रीती
काल राति निशिचर कुल केरी। तेहि सीता पर प्रीति घनेरी॥

दोहा तात चरण गहि मांगउ राखहु मोर दुलार
सीता देहु राम कहं अति हित होइ तुम्हार
बुध पुराण श्रुति सम्मत बानी। कही विभीषण नीति बखानी

सुनत दशानन उठा रिसाई। खल तोहि मृत्यु निकट चलि आई
जिअसि सदा शठ मोर जिआवा। रिपु कर पक्ष सदा तोहि भावा
कहसि न खल अस को जग माहीं। भुज बल जेहि जीते हम नाहीं।
मम पुर बसि तपसिन सन प्रीती। शठ मिलु जाहि तासु कहु नीती
अस कहि कीन्हेसि चरण प्रहारा। अनुज गहे पद बारहि बारा॥
उमा संत कै यहै बड़ाई॥। मंद करत जो करै भलाई॥
तुम पितु सरिस भलेहि मोहिं मारा। राम भजे हित होइ तुम्हारा॥
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ। सबहि सुनाय कहत अस भयऊ
दोहा राम सत्य संकल्प प्रभु सभा काल वश तोरि॥
मैं रघुनायक शरण अब जाउं देहु जनि खोरि
अस कहि चला विभीषण जबही। आयु हीन भे निशिचर तबही
साधु अवज्ञा तुरत भवानी। कर कल्याण अखिल कर हानी
रावण जबहि विभीषण त्यागा। भयो विभव विनु तबहि अभागा
चलेउ हर्षि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं
देखिहौं जाइ चरण जल जाता। अरुण मृदुल सेवक सुखदाता
जे पद परसि तरी ऋषि नारी। दंडक कानन पावन कारी॥
जे पद जनक सुता उर लाये। कपट कुरंग संग धरि धाये।
हर उर सर सरोज पद जोई। अहो भाग्य मैं देखब सोई
दोहा जिन पायन कर पादुका भरथ रहे मनु लाय॥
ते पद आजु विलोकि हौं इन नयनन अब जाय
इहि विधि करत सप्रेम विचारा। आयउ सपदि सिंधु के पारा

कपिन विभीषण आवत देखा। जानेउ कोउ रिपु दूत विशेखा
ताहि राखि कपि पति पहं आये। समाचार सब जाइ सुनाये।
कह सुग्रीव सुनिय रघुराई। आवा मिलन दशानन भाई
कह प्रभु सखा बूझिये काहा। कहा कपीश सुनहु नरनाहा
जानि न जाइ निशाचर माया। काम रूप केहि कारण आया
भेद हमार लेन शठ आवा। राखिय बांधि मोहिं अस भावा
सखा नीति तुम नीकि विचारी। मम प्रण शरणागत भय हारी
सुनि प्रभु वचन हर्ष हनुमाना। शरणागत वत्सल भगवाना

दोहा शरणागत कहं जो तजें निज अनहित अनुमानि
ते नर पामर पाप मय तिन हिं विलोकत हानि॥

कोटि विप्र बध लागहि जाहू। आये शरण तजौं नहिं ताहू॥
सन्मुख होइ जीव मम जबहीं। जन्म कोटि अघ नाशौं तबहीं
पाप वंत कर सहज सुभाई॥ भजन मोर तेहि भावन काऊ
जो पै दुष्ट हृदय सो होई। मोरे सन्मुख आव कि सोई
निर्मल मन जन सो मोहिं पावा। मोहिं कपट छल छिद्र न भावा
भेद लेन पठवा दश शीशा। तब हु न भय कछु हानि कपीशा
जग महं सखा निशाचर जेते। लछमण हनहिं निमिष महं तेते
जो सभीत आवा शरणाई। रखिहौं ताहि प्राण की नाई

दोहा उभय भांति ले आवहु हंसि कह कृपानिधान
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद आदि हनुमान

चतुरार्द्द के विषय में दृष्टान्त

दोहा भाव सरस समुझत सबै भले लगै यह भाय
जैसे अवसर की कही बानी सुनत सोहाय ॥
नीकी पै फीकी लगै बिन अवसर की बात ॥
जैसे बरणत युद्ध में रस सिंगार न स्वहात ॥
फीकी पै नीकी लगै कहिये समय विचारि ॥ ॥
सब के मन हर्षित करै ज्यों विवाह में गारि ॥
जाही ते कछु पाइये करिये ताकी आस ॥ ॥
रीते सर वर पै गये कैसे बुझत पियास ॥ ॥
स्वाति बूंद है सघन में चातक मरत पियास
जो जाही को है रहै सो तेहि पूरै आस ॥
भले बुरे सब एक से जब लग बोलत नाहिं
जानि परत है काक पिक ऋतु बसंत के माहिं
मधुर वचन ते जात मिटि उत्तम जन अभिमान
तनक सीत जल से मिटै जैसे दूध उफान ॥
सबै सहायक सबल के कोइ न निबल सहाय
पवन जगावत आग को दीपहि देत बुझाय ॥
कछु बसाय नहिं सबल सों करै निबल सों जोर
चलै न अचल उखारि तरु डारत पवन झकोर
जो जाही सों रचि रह्यो तिहि ताही सों काम
जैसे किरवा नीम को कहा आम सों काम ॥

प्रकृति मिले मन मिलत है अनमिलते न मिलाय
दूध दही ते जमत है कांजी ते फटि जाय ॥ ॥
पर घर कबहु न जाइये गये घटत है जोति
रवि मण्डल में जात शशि क्षीण कला द्युति होति
ब्रह्म बनाये बन रहे ते फिरि और ब नैन ॥
कान कहत नहिं बैन जो जीभ सुनत नहिं बैन
मूरख गुण समुझै नहीं तौन गुणी में चूक
कहा भयो दिन के विभव देखे जो न उलूक ॥ ॥
मूढ़ तहाहीं मानिये जहां न पंडित होय ॥ ॥
दीपक को रवि के उदय बात न पूछे कोय ॥
निपट अबुध समुझै कहा बुधजन वचनबिलास
कबहूं भेक न जानही अमल कमल की बास ॥
सांच झूठ निर्णय करे नीति निपुण जो होय ॥
राज हंस बिन को करे क्षीर नीर को होय ॥
दोष हि कोउ न हे गहे गुण न गहे खल लोक
पिये रुधिर पय ना पिये लगी पयोधर जोंक ॥
कारज धीर होत है काहे होत अधीर ॥ ॥
समय पाय तर वर फरे केतिक सींचो नीर ॥
क्यों कीजे ऐसे यतन जाते काज न होय ॥
परबत पै खोदे कुवां कैसे निकसै तोय ॥
जो चाहे सोई करे बडे असंकित अंग ॥

सब के देखत नगन हर धरत गौरि अरधंग
बड़े सहज ही बात सों रीझि देत बक सीस॥
तुलसी दल ते बिल्लु जो आक धतूरे दीन्ह॥
सुधरी बिगरे बेगही बिगरी फिरि सुधरैन॥
दूध फटे कांजी परे सो फिरि दूध बनैन ॥ ॥
छोटे नरते रहत है शोभा युत शिर ताज॥
निरमल राखे चांदनी जैसे पायं दाज ॥
सहज रसीलो होय जो करै अहित पर हेत
जैसे पीड़ित कीजिये ऊख तऊ रस देत॥
कबहूं कुसंग न कीजिये किये प्रकृति की हानि
गूंगे को समुझाय वो गूंगे की गति आनि।
कहा करै कोऊ यतन प्रकृति छोर की ओर
विष मारै ज्यावै सुधा उपजै एकहि ठौर ॥
डरै न काहू दुष्ट सों जाहि प्रेम की बान ॥
भवर न छोड़ै केतकी तीखे कंटक जान ॥
धन बाढ़े मन बढ़ गयो नाहिन मनघट होय
ज्यों जल संग बाढ़ै जलज जल घट घटै न सोय
सब ते लघु है मांगिवो यामें फेर न सार ॥
बलि पै यांचत ही भये वावन कर करतार
सबै एक से होत नहिं होत सबन में फेर॥
कपरा रवादी बाफतो लोह तवा शाम शेर।

जैसे की सेवा करै तैसी आशा पूर ॥ ॥
रत्ना कर सेवै रतन सर सेवै सालूर ॥ ॥
होत सुसंगति सहज सुख दुख कुसङ्ग केथान
गंधी और लोहार की बैठहु देखु दुकान ॥
ठौर छुटे ते मीत हू है अमीत सत रात ॥
रवि जल उघरे कमल को जारत गारत जात
जात गुनी जा तन तहां आडम्बर युत सोय
पहुंचे चहु॰ आकाश लौं जो गुन संयुत होय
गुन वारो सम्पति लहै लहै न गुन बिन कोय
काढ़ै नीर पताल ते जो गुन युत घट होय
आरि छोटो गुनिये नहीं जाते होत बिगार
तृण समूह को छिनक में जारत तनक अंगार
पंडित जन को अम मरम जानत जे मतिधीर
कबहूं बांझ न जानहीं तन प्रसूत की पीर
वीर पराक्रम ना करैं तासों डरत न कोय
बालकहूं को चित्र के बाघ खिलौना होय
नृप प्रतापे ते देश में रहै दुष्ट नहिं कोय ॥
प्रगटे तेज दिनेश को तहां तिमिर नहिं होय
कारज ताही को सरै करै जो समय निहार
कबहूं न हारै खेल जो खेलै दांव विचार
कोऊ दूर न करि सकै उलटे विधि के अंक

उदधि पिता तउ चंद्र को धोय न सक्यो कलंक
गांहक सबै सपूत के सारे काम सपूत॥
सब को डंपन होत है जैसे बन को सूत॥
करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान
को सुख को दुख देत है देत कर्म झक झोर
उरझै सुरझै आप ही ध्वजा पवन के जोर
भली करत लागै बिलंब बिलंबन बुरे विचार
भवन बनावत दिन लागै ढाहत लगै न वार
सोई अपनो आपनो होत निरंतर साथ॥
होत पराये आपनो शस्त्र पराये हाथ॥
कहु रस में क्यों रोस में अरि से जनि पतियाय
जैसे शीतल नल जल डारत अग्नि बुझाय
अंतर अंगुरी चारि को सांच झूंठ में होय॥
सब मानै देखी कही सुनी न मानै कोय॥
होय भले के सुत बुरो भलो बुरे के होय॥
दीपक सों काजल प्रगट कमल कीच में होय
होय भले चाकरन ते भले धनी को काम
ज्यों अंगद हनुमान ते सीता पाई राम
सुख सज्जन के मिलन को दुरजन मिले जनाय
जाने ऊख मिठास को जब मुख नींब चबाय

जाहि मिले सुख होत है तेहि बिछुरे दुख होय ॥
सूर्य उदय फूलै कमल ता बिन सकुचै सोय ॥
झूठे हू करिये यतन कारज बिगरे नाहिं ॥
कपट पुरुष धन खेत पर देखत मृग फिरिजाहिं
कारज सोइ सुधारि है जो करिये सम भाय॥
अति बरसे बरसे बिना ज्यों करसन कुंभिलाय।
रहै प्रजा धन यत्न सों तहं वांकी तर वारि ॥
सो फल कोउ न लै सकै जहां कटीली डारि।
पंडित अरु बनिता लता शोभित आश्रम पाय
है मानिक बहु मोल को हेम जटित छवि छाय
अपनी प्रभुता को सबै बोलत झूंठ बनाय ॥
वेश्या बस्त्र घटा वही योगी बस्त्र बढ़ाय॥
कहूं कहूं गुन दोष तें उपजत दुःख शरीर ॥
मधुरी बानी बोलि के परत पींजरे कीर ॥ ॥
भले बुरे निबहैं सबै महत पुरुष के संग ॥ ॥
चन्द्र सर्प जल अग्निये बसत शंभु के अंग॥
बिना कहेहू सत पुरुष वर को पूरै आश ॥
कौन कहत है सूर्य्य को घर घर करत प्रकाश
कछु कहि नीच न छोड़िये भलो न वाको संग
पाथर डारे कीच में उछलि बिगारै अंग ॥
मीठी खाटी वस्तु नहिं मीठी जाकी चाह ॥

अंबिली मिसरी छांड़ि के आपे खात सराह॥
खाय न खरचै शुद्ध मन चोर सकल ले जाय॥
पीछे ज्यों मधु मक्षिका हाथ मलै पछिताय॥
उत्तम विद्या लीजिये जो पै नीच पै होय ॥
परो अपावन ठौर में कांचन तजत न कोय।
जानि बूझि अजु गुनि करै तासों कहा बसाय
जागत ही सोवत रहै ताको कहा जगाय ॥
सजन बचावै कष्ट ते रहै निरंतर साथ ॥
नैन सहारू ज्यों पलक देह सहारू हाथ ॥
अरि के कर में दीजिये औसर को अधिकार
ज्यों ज्यों द्रव्य लुटाइ है त्यों त्यों यश विस्तार
बुद्धिवान गंभीर को संगत लागत नाहिं ॥
ज्यों चंदन ढिग अहि रहत विष न होय तेहि माहिं
सज्जन को दुख दूर दिये दुरजन पूरे आस॥
जैसे चंदन को घिसे सुंदर देत सुबास ॥
सज्जन चित कबहूं न धरत दुरजन जन के बोल
पाहन मारे आम को तउ फल देत अमोल
विरले नर पंडित गुनी विरले बूझन हार।
दुख खंडन विरले पुरुष जे उत्तम संसार॥
जे करतार बड़े किये मग पग धरत विचार
दुर्जन हूं सों मिलि चलैं बोलैं रोस निवार।

जाहि बड़ाई चाहिये तजै न उत्तम साथ॥ ॥
ज्यों पलास संग पान के पहुंचे राजा हाथ॥
वचन पारखी होहि तू पहिले आपन भाव॥
अन पूछे नहिं भाषिये यही सीख जिय राख।
मुख रु श्रवण दृग नासिका सब ही के एक ठौर
कहबो सुनिबो देखबो चतुरन को कछु और
एक कामिनि अरु कवि वचन होउ रस को ठौर
बेधक को मन बेधई वे कामिनि कवि और॥
जो तू चाहै अधिक रस सीख ऊख को लेय॥
जो तोसों अनरस करै ताहि अधिक रस देय॥
नर की अरु नल नीर की गति एकै करि जोय।
ज्यों ज्यों नीचे ह्वै चलै त्यों त्यों ऊंचो होय॥
कैसे निबहै निबल जन करि सबलन सों गैर॥
जैसे बस सागर बिषे करत मगर सों वैर॥
अपनी पहुंच विचारि कै करतब करिये दौर।
ते ते पांव पसारिये जेती लंबी सौर॥ ॥
पिसुन छल्यो नर सुजन सो करत विश्वासन चूक
जैसे दाझो दूध को पीवत छांछहि फूंक॥
फेर न ह्वै है कपट सों जो कीजे व्योपार॥
जैसे हांडी काठ की चढ़ै न दूजी बार॥ ॥
करिये सुख को होत दुख यह कह कौन सयान॥

वा सोने को जारिये जासों फाटे कान ॥ ॥
भले बुरे जहं एक से तहां न बसिये जाय ॥
ज्यों अन्याय पुर में बिके खर गुड़ एकै भाय ॥
भाव भाव की सिद्धि है भाव भाव में भेव ॥
जो मानै तो देव है नहीं भीत को लेव ॥ ॥
अति अनीति लहिये न धन जो प्यारे मन होय ॥
पाये सोने की छुरी पेट न मारे कोय ॥ ॥ ॥
मूरख को पोथी दई बांचन का गुण गाय ॥
जैसे निरमल आरसी दई आंधरे हाथ ॥ ॥
अति हठ मत कर हठ बढ़े बात न करिये कोय
ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होय
लालच हू ऐसो भलो जासों पूजे आस ॥ ॥
चाटत हूं कहुं ओस के बुझत काहु की प्यास
जैसो गुण दीन्हों दई तैसो रूप निबंध ॥ ॥
ये दोऊ कहं पाइये सोनो और सुगंध ॥ ॥
प्रेम निबाहन कठिन है समुझ कीजियो कोय
भंग भरवन है सुगम पै लहर कठिन ही होय
एक वस्तु गुण होत है भिन्न प्रकृति के भाय ॥
भटा एक कोपित करै करत एक को बाय ॥
बिन स्वारथ कैसे सहै कोउ कटुवे बैन ॥
लात खाय चुप कारिये जो होय दुधारू धेन ॥

करे बुराई सुख लहै कैसे पावे कोय ॥ ॥
रोपे पेड़ बबूल को आंब कहां ते होय ॥
होय बुराई ते बुरो यह कैसो निरधार ॥
खात खनै गो और को ताको कूप तयार ॥
एक भेष के आसरे जोति वरण छिपिजात
ज्यों हाथी के पांव में सब को पांव समात ॥
कन कन जोरे मन जुरे खाते निरवे सोय ॥
बूंद बूंद सों घट भरे टपकत बीते तोय ॥
श्रम हीं सों सब मिलत है बिन श्रम मिलै न काहि
सीधी अंगुरी घी जम्यो कबहूं निकरत नाहिं
होत न कारज मो बिना यहै कहै सो अयान
जहां न कुक्कुट शब्द तहं होत न कहूं बिहान
यही बात सब ही कहै राजा करै सो न्याव ॥
ज्यों चोपरि के खेल में पांसो परै सो दांव ॥
पर को औ गुण देखिये अपनी दृष्टि न होय
करै उजेरो दीप पै तरे अंधेरो जोय ॥ ॥
अपनी अपनी ठौर पर सब को लागे दाव।
जल में गाड़ी नाव पर थल गाड़ी पर नाव।
सुख देखाय दुख दीजिये खल सों लरिये काहि
जो गुड़ दीन्हे ही मरत क्यों विष दीजे ताहि।
अन पूछे ही जानिये मूढ़ देखि मन माहिं ॥

छल के ओछे नीर घट पूरे छल के नाहिं ॥
बिन अवसर न लावा ही ओछे जन की प्रीति
अम्बर डम्बर सांझ के ज्यों बारू की भीति
गुन सपूत जान्यो परे खल सब लक्षण गात
होन हार बिरवान के होत चीकने पात ॥
जो धनवंत सुदेय कछु देय कहा धन हीन
कहा निचोरे नग्न जल न्हाय सरोवर दीन ॥
होत निवाहन आपनो लीन्हे फिरे समाज
चूहा बिल न समात है पूंछ बांधिये छाज
बिना प्रयोजन भूलि हू ठटिये नाहीं ठाट ॥
जानो नहिं जा नगर को ताकी पूंछन बाट
इंगित औ आकार ते जान लेत जो भेद
तासों बात दुरै नहीं ज्यों दारू सों पेट ॥
आप कहै नाहिन करै दाता को है हेत ॥
आप न जावे आसरे और न को सिख देत
जो करिये सो कीजिये पहिले कर निरधार
पानी पी घर पूंछनो नाहक भलो विचार
पाछे कारज कीजिये पहिले यतन विचार
बड़े कहत हैं बांधिये पानी पहिले पार।
ठीक किये बिन और की बात सोचत अथर्प
हाथ अंधेरी रैन में परी जेवरी सर्प ॥

झूंठ बिना फीकी लगै अधिक झूठ दुख भौन
झूंठ तितोही बोलिये ज्यों आटे में लोन ॥
ठौर देखि के हूजिये कुटिल सरल गति आप
बाहर देढ़ो फिरत है बांबी सूधो सांप ॥ ॥
दोऊ चाहैं मिलन को तो मिलाप निरधारि
कबहूं नाहिन बाजि है एक हाथ ते तारि ॥
आपे कारज आपनो करत कुसंगति आप ॥
पाय कुल्हारी देत है मूरख अपने हाथ ॥
नाही को करिये यतन रहिये जाकी आर ॥
कौन बैठ के डार पर काटै सोई डार ॥ ॥
पर तछनी के देखिये कह वरने कोउ ताहि
कर कंकन की आरसी को देखत है चाहि
आये आदर ना करै जात रहै पछिताय ॥
आयो नाग न पूजिये बांबी पूजन जाय ॥
निबल सबल के पक्ष ते सबलन सों अनखात
देत हिमायत की गधी एरा की के खात ॥
बहुत द्रव्य संचय जहां चोर राज भय होय
कांसे ऊपर बीजली परत कहै सब कोय।
ओछे नर के पेट में रहै न मोटी बात ॥
आध सेर के पात्र में कैसे सेर समात ॥ ॥
तर से हू पर से नहीं नौढ़ा रहत उदास ॥ ॥

जो सर सूखा भाद में किसी उन्हाले आस॥
हिलत मिलत चित बन मिटी वय बीते कर तूल
योगी था सो उठ गया आसन रही भभूत ॥
मिलन चले आये बहुरि तउ न रही नियचित्त॥
कांधे डारी कामरी योगी काके मित ॥ ॥
तजि कै सुंदर चतुर पिय बिरझे अनत बसाय
कूकर चोक चढ़ाइये चाकी चाट न जाय ॥
निरखि भान सौती संबे रहीं प्रीति हित हार
लेय परोसिन झोपरी नित उठि करती रार
वय रति गति मति चाह बिन पिय रिझवन कीबाक
धोबी बेटा चांदसा सीपी और पटाक ॥ ॥
रूठ्यो पिय सौतिन निल्यो सखिहि रिझत कर भान
नाव सचलति कुम्हार को खर के मेटति कान
पिय चित बन पठई सखी रही बैठ सुख लेय॥
चारो कुतिया मिल गई पहरो काको देय ॥ ॥
सब सुखन्द पिय हित करे तऊ न रहत नियनीति
भुस ऊपर को लीपनो अरु बालू की भीति॥
पिय औरे चित बन चलन घर नियसो नहिं लेस।
जैसे कंथा घर रहे तैसे गये विदेश ॥ ॥
वय बीते आये रमन अब न लहत चित चाय॥
बीत्यो ब्याह कुम्हार को भांडा लेले जाय॥

सोरठा पतरी लै घर आव आगि वारि दे गोद ले ॥
करन पात पहि राव कस कहो वारी न हीं ॥
अपने अपने कर थपे लिखि पूजत तिय भीति
सुफल होय मन कामना तुलसी प्रेम प्रतीति ॥
तुलसी जहां विवेक नहिं तहां न कीजे बास।
स्वेत स्वेत सब एक से करर कपूर कपास ॥
राम नाम आराधबो तुलसी वृथा न जाय॥
लरकाई को पैर बो आगे होत सहाय ॥
जिमि पनिहारी जेवरी खैंचत कटे पखान॥
तुलसी रसना राम कहु पाय केतिक अनुमान।
तुलसी रसना तो भली जो तू सुमिरै राम॥
नाहित काढ़ि निकासिये मुखमें भलो न चाम
तुलसी विलंब न कीजिये भजि लीजे रघुबीर
तन तरकस ते जात है स्वास सारि खे तीर
एकै साधे सब सधै सब साधे सब जाय॥
जो गहि सेवै मूल को फूलै फलै अघाय ॥
स्वारथ सीता राम हैं परमारथ सिय राम॥
तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहा है काम ॥ ॥
स्वारथ परमारथ सुलभ सकल एक ही ओर
द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ॥
तुलसी सोई चतुरता राम चरण लव लीन

परधन परमन हरन को वेश्या बड़ी प्रवीन
चतुराई चूल्हे परै ज्ञानी यम के घाव ॥
तुलसी हर सों प्रेम नहिं सो जर मूल न साव॥
तुलसी जो पै राम सों नाहीं सहज सनेह ॥
मूड़ मुड़ायो सो वृथा भांड़ भये तजि गेह॥
मूड़ उघारन किन कह्यो वरज रहे प्रिय लोग
घरही सती कहावती जरती नाहिं वियोग॥
यथा लाभ संतोष सुख प्रभु पर चरण सनेह
तुलसी जो मन हाथ है जस कानन तस गेह
तुलसी खोटे दास को रघुपति राखत मान ॥
ज्यों मूरख उपरोहि तहि देत दान यजमान
गंगा यमुना सरस्वती सात समुद्र भरिपूर॥
तुलसी चातक के मते बिन स्वाती सब धूर॥
गुण स्वरूप बल द्रव्य को प्रीति करै सबकोय
तुलसी प्रीति सराहिये जो दून ते बाहर होय
मीन काटि जल धोइये खाये अधिक पियास
तुलसी प्रीति सराहिये मुये मीत की आस
प्रभुता को सब कोउ चहै प्रभु को चहै न कोय
जो तुलसी प्रभु को चहै तुरतै प्रभुता होय॥
तुलसी घर के घेर में घरी घरी तन छीन ॥
कबहूं नाव न बन फिरै कर कर नाको पीन॥

काम क्रोध मद लोभ की जब लग मन में खान
तब लग पंडित मूरख हू तुलसी एक समान
स्वामी को सेवक घने सेवक को प्रभु एक ॥
तुलसी यामें सो बड़ो जाके मन में टेक ॥ ॥
तुलसी मन को मुकुर है लखै सुलक्षन कोय
जैसो जाको भाव है तैसे ताको होय ॥ ॥
होत भले के भल भलो होत दानि के दान।
होत कपूत सपूत के ज्यों पावक मह धूम॥
नीच निचाई ना तजै साधन हूं के संग ॥
तुलसी चंदन विटप बस बिन विष भौन भुवंग
आसन दृढ़ आहार दृढ़ सुमति ज्ञान दृढ़ होय
तुलसी बिना उपासना बिन दूलह की जोय
आवत ही हर्षै नहीं नयनन नहीं सनेह ॥
तुलसी तहां न जाइये कंचन वर्षै मेह ॥
हरषि उठै आदर करै आवत जान अतीत
तुलसी तब हीं जानिये परमेश्वर सों प्रीत
तुलसी या संसार में भांति भांति के लोग
हिलिये मिलिये प्रेम सों नदी नाव संयोग
तुलसी कहत पुकारि के सुनो सकल दे कान
हेम दान गज दान ते बड़ो दान सन मान॥
पर सुख संपति देखि सुनि जरहिं ते जड़ बिन आग

तुलसी तिन के भाग ते चलै भलाई भाग
तुलसी कबहुं न त्यागिये अपने कुल की रीति
लायक हूं सो कीजिये ब्याह बैर अरु प्रीति
तुलसी निज कीरति चहै पर कीरति को खोय
तिन के मुख मसि लागिये मिटै न मरिहै धोय
तुलसी या संसार में पंच रत्न हैं सार ॥
साधु मिलन अरु हरि भजन दया दीन उपकार
बैर सनेह सयान को तुलसी जो नहिं जान ॥
सो किमि प्रेम मग पग धरै पशु बिन पूंछ बखान
यह संसार मन मोहना मन मोहै दिन रात ॥
बिना भक्ति जे रहत हैं जन्म अकारथ जात
धन योवन को गर्वयो कबहूं करिये नाहिं
देखत ही मिटि जात है ज्यों बादर की छाहिं
जान बूझ अज गुति करै तासों कहा बसाय
जागत ही सो बत रहै तेहि को सकै जगाय
या संसार में आय के छांडि देय तू ऐंठ
लेना है सो लेइ ले उठी जात है पैंठ ॥
सांच बरो बर तप नहीं झूंठ बरो बर पाप
जाके हिरदे सांच है ताके हिरदे आप ॥
सांचे आप न लगाई सांचे काल न खाय ॥
सांचे को सांचा मिले सांचे माहिं समाय ॥

सत्य वचन मुख जो कहत ताकी चाह सराह
गाहक आवत दूरि ते एक शब्द की चाह।
जग में प्रतीति बढ़ाइये रहिये सांचे होय ॥
झूठे नर की सांचिये साखि न माने कोय ॥
कहते हैं करते नहीं सो तो बड़े लबार ॥
आखिर धक्के खायेंगे ईश्वर के दरबार ॥
कल्ह करै सो आज ही आज करै सो अब्ब
पल में परलय होयगी बहुरि करोगे कब्ब
सुख में सज्जन बहुत हैं दुख में लीन्हें छीन
सोना सज्जन कसन को बिपति कसौटी कीन
दुख में सुमिरन सब करें सुख में करै न कोय।
सुख में जो सुमिरन करै तो दुख काहे को होय
मेरा मुझ को कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर
तेरा तुझ को सौंपता क्या लागै है मोर ॥
पांव पै लगी सुध नहीं करै काल को साज ॥
काल अचानक मारि है ज्यों तीतर को बाज
माली आवत देखि के कलियां कली पुकार ॥
फूली फूली चुनि लई काल्हि हमारी बार ॥
काचा काया मन अथिर थिर थिर काम करंत
ज्यों ज्यों नर निधरक फिरै त्यों त्यों काल हसंत
आस पास योधा खड़े सबै बजावे गाल ॥

बीच महल ते लै चले ऐसा बरबस काल ॥
माटी कहै कुम्हार सों क्या रूंधै तू मोहिं ॥
एक दिन ऐसा होयगा मैं रूंधौंगी तोहिं ॥

प्रश्नोत्तर

देबो यश को मूल है याते देबो ठीक ॥ ॥
पर देबे मैं जानि लो दुख कबहूं नहिं नीक
संचय करिबो है भलो सो आवै बहु काम ॥
पाप न संचय कीजिये जो अपयश को धाम
जड़ कबहूं नहिं काटिये काहू की मन धारि
पाप रु ऋण की जर कटी भलो एक निरधारि
भलो होत नहिं मारिबो काहू को जग माहिं ॥
भलो मारिबो क्रोध को तासम नर रिपु नाहिं
जोरी करि नहिं रोकिये काहू को मन मीत
बनै तो मन को रोकिये याते होय बिनीत ॥
संग सदा सुख दान है करिये सज्जन देख
कबहुं न करिये दुष्ट को संग यही अवरेख
करै हिरस जो काहु की तामो लह नर हान।
पर विद्या की हिरस वर जासों हो जग मान ॥
प्रीति रीति दुख मूल है मैं कीन्हों निरधार ॥
प्रीति भली भगवान की याते हो भव पार
भलो न जग में त्रास कोउ त्रास दुःख को मूल ॥

पर गुरु पितु के त्रास ते मिटै दुःख को मूल ॥ ॥
बुरो मांगिबो जगत में याते हो अपमान ॥
क्षमा मांगिबो दूरते भले एक करि ज्ञान ॥
प्रातहि उठि के नित्य तू करिये प्रभु को ध्यान
जाते जग में होय सुख अरु उपजै सत ज्ञान
काहू ते कटुओ वचन कहो न कबहूं जान
तुरत मनुज के हृदय में छेदत है जिमि बान ॥
पढ़िबो में कबहूं नहीं नागा करिये चूक ॥ ॥
कुपढ़ लोग मांगत फिरैं सहहिं निरादर भूक
कबहुं न चोरी कीजिये यद्यपि मिल बहु वित्त
नर कंसि ताके फंद में पावत दुःख अमित्त ॥
मीठी बोली बोलिये करिये सब सों प्रीति ॥
करै प्रेम तासों सकल लखि शुक सारिक रीति
यद्यपि होतु पितु मातु को सब सुतपै सम नेह
लखि सपूत ठंढक लहै जरत कपूत लखि देह
जो जन धैर्य धारि मन जरत देखि पर हित्त
कैसे ऐसे पुरुष के शीतलता रह चित्त ॥
जानि सर्व गति दैव की करै न कबहूं पाप ॥
सबहि चराचर जगत को देखत है वह आप ॥
सुनि कै दुर्जन के वचन हो रहिये चुप चाप ॥
करै जो समता तासु की नीच कहावै आप ॥

प्रश्नोत्तर द्वितीय प्रकार

दोहा सुखी जगत में कौन है कहो मोहिं समुझाय
होय लीन भगवान में सुखी वही जग माहं
दुखी कहत है कौन सों ईश सृष्टि के बीच॥
देखि परोदय जो जरै दुखी रहत वह नीच
को जग में धनवान है जाको मन न डोलाय
जो राखै संतोष मन वह धनिकन में राय॥
कहत दरिद्री कौन सो कहो मोहिं करि नेह
धन तृष्णा जाके अधिक जानु दरिद्री तेह॥
पुण्य वान जन होहिं जे तिन की कहु पहिचान
ईश्वर उर जाके हृदय पुण्य वान सो जान॥
पापी जन जो जगत में सो किमि जानो जाय
जो अपने प्रभु सों विमुख पापी वही कहाय
बुद्धि मान नर के अबै लक्षण कहो बखान
जो जन निन्दा सों डरै बुद्धिमान सो जान॥
सज्जन जन जग कौन से कहु निश्चय करमोहि
राखि दया सब भल चहै सज्जन जानो सोहि
सब हि जगत जन एक से कैसे दुष्ट लखाय
पर अकाज में जासु चित सो नर दुष्ट कहाय
बड़ो कवन या जगत में पूंछौं मैं यह बात॥
ढकै दोष जो सबन के सो जन बड़ो कहात

दुष्टा भार्या मीत शठ उत्तर दहलुआ देह ॥
सांप साथ घर बास करि मीचु हाथ गनि लेह

राज नीति दोहा ॥

करै न रिपुता काहु सों सब के रहु तुम मीत ॥
जाते मन प्रफुलित रहै होइ न रिपु की भीत
रहो जौन से देश में तहां के नृप की नीति ॥
देखि चलो ता चाल को यह चतुरन की रीति
श्रम सुचाल के कारणो नर लहि प्रभु चित वास
ताते धन कीरति लहै पूरे पद की आस ॥ ॥
जो नृप विद्या बल बिना कियो चहै परबंध
सो पूरी आपति लहै जिमि कुघाट चल अंध
पहिले लखिये दोष गुण फेरि अरंभै काज
जाते मन को होन दुख लहै न जग में लाज
ऐसे नर सों बच रहो करै न कबहूं घात ॥
बार बार सो गन्ध खा कहै दीन ह्वै बात ॥
सुनि कै सब की बात को प्रथमहिं ढूंढो हेत
फिरि उत्तर मुख ते कहो यहि विधि राखो चेत
पर निन्दा करि जो तुम्हैं देत बड़ाई पूर ॥
मति भूलो यापै कहूं तुम्हैं कहै गो कूर ॥
जो आपुस में बैर करि मिले और के साथ ॥
वे भोगत हैं बहुत दुख परि वैरी के हाथ ॥

पालौ परजा पाय पद जाते जग यश होय ॥
पावो सुख पर लोक मैं यह कहि चतुरन सोय

कुंडली

प्राण पुत्र दोऊ बड़े युग चारहु परमान। सो नरेश दशरथ तजे वचन न दीन्हो जान। वचन न दीन्हों जान बड़े न कीय ही बड़ाई। वानि कही सो होय और सर्वस किन जाई। कहि गिरिधर कवि राज भये दशरथ प्रण वाना। वचन कहे नहिं तजे तजे सुत अरु निज प्राणा ॥

नारी अति बल के भये कुल कर होय विनाश। कौरव पांडव वंश को कियो द्रोपदी नाश। कियो द्रोपदी नाश कैकेई दशरथ मारे। राम चन्द्र से पुत्र त्यऊ बन बास सिधारे। कहि गिरिधर कवि राय सदा नर रहैं दुखारी। सो घर सत्या नाश जहां है अति बल नारी ॥

चारो शायर दश भले कायर भल न पचास। शायर रण सन्मुख लरै कायर प्राण की आस। कायर प्राण की आस भागि रणते वे आवैं। आपु हंसावहिं लोग नृपति को नाम धरावैं। कहि गिरिधर कवि राय बात चारहु युग जाहिर। शायर भले हैं पांच संग सो भले न कायर ॥

तो रहु नदी न तीर तरु जो बरखा बरसाय। वारि बाढ़ि दिन चारि की अपयश जन्म न जाय। अपयश जन्म न जाय जाय पाहन मिटि रेखा। विभव बड़ाई समय सदा

कहुं रहत न देखा। कहि गिरिधर कवि राय एक नेकी जनि छोड़हु। समय घटत पुनि बढ़त तीर तरु नदी न तोरहु॥

बड़े पात को देखि कै चढ़ो कमंडल धाय। तरु वरहो हित भरु सह हि रंड फटो अरराय। रंड फटो अरराय फूल अंत-हि कहुं फूला। बतियां गर्द सुरवाय और मारग में भूला। कहि गिरिधर कवि राय सुनहु अन ओही अड्डे। वे देखहि जनि जाहु जहां बातन के बड्डे॥

जाकी धन धरती लर्द ताहि न लीजे संग। जो संगै राखै बनै तो करिडारु अपंग। तो करिडारु अपंग फेरि फरकै सोन कीजे। कपट फंद बत लाय तासु को मन हर लीजे। कहि गिरिधर कवि राय खटकजै है नहिं ताकी। सो कछु करै उपाय हरी धन धरती जाकी॥

हीरा अपनी खानि को मन हीं मन पछिताय। गुण क़ीमति जानी नहीं तहां विकानो आय। तहां विकानो आय छेदि करि कमर सों बांध्यो। बिन हरदी बिन लोन मांस ज्यों फूहर रांध्यो। कहि गिरिधर कवि राय धरौं कैसे मन धीरा। गुण क़ीमति घटि गर्द यही कहि रोवै हीरा॥

हंसा यहं रहिये नहीं सर वरगये सुखाय। जो रहिये तौ शीशपर बगुला देहैं पाय। बगुला देहैं पाय कीच कारे ह्वै जैहो। लोक हंसार्द होय कहा कछु दूजति पैहो। कहि गिरिधर कवि राय मोहिं एक एही आसा। याहूते कछु घाटि और हू होर्द हंसा॥

मयना जब पर वश परे उत्तम गुण सब जांय। वे फिरि

फिरि जोरी करैये फिरि फिरि लपटांय। ये फिरि फिरि लपटां
य नेत्र बहुरै भरि आवैं। खान पान सुख त्यागा रात दिन
हीं दुख पावैं। कहि गिरिधर कवि राय सुनहु तुम श्रवण
निनयना। लोक जोदें अकलंक परैं जब पर बस नयना॥
धोखे दाड़िम के सुवा गयो नारियर खाय। खन खाई
पाई सजा तब लाग्यो पछिताय। तब लाग्यो पछिताय बु
द्धि अपनी को रोवै। निर्गुणियन के साथ बैठि अपनो गुण
खोवै। कहि गिरिधर कविराय घरै जैहै बिन रोखे। चोंच ख
ट कै टूटि सुवा दाड़िम के धोखे॥
सांई पुर पाला परो आस मान ते आय। पंगु अंध को छो
ड़ि कै पुर जन चले पराय। पुर जन चले पराय अंध एक
मतो विचारो। धरि पंगा को पीठि दीदि वाकी पगु धारो।
कहि गिरि धर कवि राय मते सो चलियो भाई। बिना मते
की राज्य गई रावण की सांई॥
सांई समो न चूकिये खेलि शत्रु सों सार। दांव परे नहिं छो
ड़िये तुरत डारिये मार। तुरत डारिये मार नरद काची क
रि दीजै। काची होद तो होद जीति जग में यश लीजै। क
हि गिरिधर कवि राय बड़े बुधि मानन गाई। कोटिन क
रिय उपाय शत्रु को मारिय सांई॥
सांई घोड़न के अछत गदहन आयो राज। कौवा लैके हा
थ में छांड़ि देत हैं बाज। छांड़ि देत हैं बाज राज अब

ऐसो आयो। सिंहन को करि कैद स्यार को गज हि चढ़ायो। कहि गिरिधर कवि राय जहां ये वृक्ष बड़ाई। तहां न बसिये रयन सांझ ही चलिये साई॥

साई नदी समुद्र को मिली बड़प्पन जानि। जाति नाश भा मिलत ही मान महत की हानि। मान महत की हानि कहो अब कैसे कीजे। जल खारी ह्वै गयो कहो अब कैसे पीजे। कहि गिरिधर कवि राय कच्छ मच्छन सकुचाई। बड़ो फजीहत चार भयो नदियन को साई॥

लक्ष्मण मेघनाद का युद्ध

भुजंग प्रयात

लखा मेघ नादे निजे सैन हारी। गयो स्यंदना रूढ़ ब्योमै प्रचारी। घने अस्त्र शस्त्रौघ छांड़े कराला। कियो मर्कटी भालु सेना बिहाला। नवे लक्ष्मणे राम ब्रह्मास्त्र मारा। करो भस्म शत्रून पुरै सोपि भारा। पुनर्वानरी सैन देखा दुखारी। हृदय राम चन्द्रोपि के शोच भारी॥

दोहा क्षीर समुद्र समीप अब मारुत सुत तुम जाउ॥
द्रोणा चल औषधि सहित कपि दल लाय जिआउ
प्रभु आयसु कै लाय गिरि जिये भालु कपिवीर
पुनि पहुंचायो शैल वर क्षीर समुद्रहि तीर॥

प्रज्ज्वलिया छंद

पुनि सिंह नाद करि भट अपार। फेंकैं गढ़ पर नाना पहार

सुनि रावण विस्मय लहि अपार। बोले समस्त योधा जुझार॥
जो रहै भवन शत्रु न डेराय। तेहि तुरत डारिहौं मैं मराय॥ भय
त्रस्त जुरे सब समर जाय। डोलै निशान तूरन बजाय। मारैं त्रि
शूल असि शक्ति बान। शस्त्रौघ अस्त्र नाना विधान। गिरितरु
नख दंतन मुष्टि लात। कपि करैं असुर कुल कर निपात। पग ग-
हि महि पटकैं भुज उरवारि। शिर तोरि फोरि कोटिन संहारि।
लै कनक खंभ कोटिन कपीश। करि सकल निशाचर चमू खीश।

दोहा राम लक्ष्मण कीश पति अंगद पुनि हनुमान॥
हते निशाचर सेन बहु को करि सकै बखान॥
माघ द्वितीया आदि दै आठ दिवस रण बीच
राम कृपा कपि दल कुशल मरे निशाचर नीच

भुजंग प्रयात

पुन बज्र दंता सुरारिं प्रबोधी। अबै मर्कटी सैन मारो विरोधी॥
चतुर्था चमू संग योधा जुझारा। रगो कीश नै दैवते के प्रहारा॥
दुहूं कीश सेनाधिपो लै पहारा। चमू राक्षसी युद्ध कैकै पछारा
तहां वज्र दंता लखा सैन हारी। हते वानरा बाण वृष्टि प्रहारी।
तबै अङ्गदो वृक्ष पाया रामारा। लियो छीन खड्गो शिरो कारि डारा
गिरा वज्र दंता जबै प्राण त्यागी। रही जो चमू लंक को धूमि भागी।

प्रज्ज्वलिया

सुनि वज्र दंत हति लंकनाथ। दलि दशन अधर रिसि मीजि हाथ
पठयो अकंपनै भट जुझार। संग शूर दीन्ह सेना अपार॥

ते कपिन आयकरि द्वंद्व युद्ध ।। शर शक्ति शूल असि हते क्रुद्ध
कपि यूथप लैले तरु पहार ।। रजनी चर दल हति करैं संहार
गज रथ हय बाहन सकल नाशि। रजनी चर भटन पकरि त्रासि।
लखि घाय अकंपन भटजुझार शर शूल न हति सेन पविडार
पुनि हनो मानते लरै लाग ।। शर शक्ति शूल विवि चोघ त्याग
तेहि रुपटि पटकि हृदि हनो मान। बध लखि अकंपन निशिचर पान

भुजंग प्रयात

प्रहस्ते लखा राक्ष सेशं जुझारा। सबै राक्षसी सैन जीते निकारा
पठायो महत् गौर वात लंक राजा। चतुर्धा चमू लै रणे आय गाजा
हहां मर्कटी युद्ध कांक्षी अपारा। शिला वृक्ष लै राक्षसी सैन मारा
उहां राक्षसी शूल शक्त्यासि पासै। गदा पार्श्व नाराच नै कीश त्रासै
लखा नील हू कीश सैना दुखारी। शिला पानि लै सो प्रहस्त प्रहारी
प्रहस्तो महावीर वाणोघ भारा। वहै रक्त पानो गिरी मेरु धारा॥
तबै नीलहू वृक्ष लै शीश मारा। गिरा सेन पो भूमि मानो पहारा
लखा प्राण त्यागा प्रहस्ते विशेषा। भयात् राक्षसा भागलंके अशेषा
सुना लंक राजा गर्द सैन मारी ।। प्रहस्तादि से सैन पौंगे हंकारी
हृदय दुःख कै मेघ नादे बोलायो पुरे सौंपि आपे रणे गर्जि आयो
लसै संग चौरंग सेना घनेरी ।। जुझाऊ बजैं ढोल तूरादि भेरी।
हहां भालु कीशो शिला पाणि लैके चके सो महा घोर संग्राम कैके
सुकंठादि राजा सबै भूमि पारा ।। रथी राचणो सर्व सेना विडारा।
पुन बंधु को देखि कै तीक्ष्ण धारा। यमं दंत शक्ती हृदय ताकि मारा

दोहा लक्ष्मण तेहि पाछे कियो आपु सही सो सांगि
गिरे मूर्छि महि तुरत ही महातीव्र उरलागि
प्रज्ज्वलिया

तब तुरत दशानन दौरि आय। बहु बल करि रहु लखनै उठाय।
किमि उठैं भुवन सब धरे भार। श्रीरामानुज शेषा वतार॥ ल-
खि तुरत धाय तब हनूमान। तेहि मारि लात वज्र प्रमान। महि
गिरा मूर्छि तन सुधि भुलाय। कपि गह्यो तबै लक्ष्मण उठाय॥

हरिगीति का

लखि बंधु गति राजीव नयनन नीर रहु सर साद्कै॥
सजि तून कटि शर चाप कर शिर जटा मुकुट बनाय के
श्री राम ह्वै आसीस हनुमत गये रन महं धाय कै॥
गंभीर वचन सुनाय लंकेश्वर हि क्रोध बढ़ाद् कै॥
सुनते दशास्य प्रहारि मारुत तीव्र शर घायल कियो
लखि सबल हनुमत कोपि रघुवर काल रुद्र दूवा दियो।
शर वर्षि धर्षि दशाननै सह सैन्य भूमि गिरा यऊ॥।
तेहि वेगि स्यंदन घालि सारथि लंक लज्जित लायऊ

तोमर

दूतराम चंद्र खरारि। रन राक्षसा गन मारि॥ ॥
पुनि आय भ्रातहि दीख। अति कीन्ह शोच विशेष
कह पवन नंदन जाउ। दिवि औषधी सोद लाउ॥
सुनि राम बैन तुरंत। गिरि लेन गो हनुमंत॥ ॥

उन चारु मुख सुधि पाय। दश मौलिहू अकुलाय
गहु काल नेमि के जाय। तेहि दीन्ह ऐसि रजाय॥
कपि औषधे गयो लेन। तेहि रोकु छल बल केन
तेहि भांति बहु समुझाय। नहिं राम मानुष आय॥
हरि लीन्ह नर औतार। सोइ भंजिहैं महि भार
तेहि वैर पूरण आइ। तेहि भजे सुख सरसाइ
सिय दै करो अति हेत। छमि हैं सो कृपा निकेत
दश मौलि नाहिं रिसान। शर वेगि कहु किन जान

तोमर

तब कालनेमि मन कियो तर्क। यहि हाथ मरे मोहिं होय नर्क।
मोहिं मारे जो मारुत कुमार। ह्वै हौं विशेषि संसार पार॥
अस समुझि मार्ग माया उपाय। सर विमल सलिल रचि कुटी छाय
सह शिष्य बैठ मुनि कपट जाय। चरण मूंदि जपै माला दिखाय।
तेहि पौन नंद मुनि कुटी ताक। सर विमल सलिल फल फरे पाक
कर दंड जाग मुनि कपट रूप। शिव पूजा जहं तहं करै अनूप।
मुनि बंदि कहा तहं पौन पूत। भगवत हनुमत मैं राम दूत॥
औषधि निमित्त गिरि लेन जाउ। भयो तृषित जल्ला पाय मोहिं बताउ
जल आय दीन्ह कै भूरि भाउ। दूत रहौ आजु फल मधुर खाउ
जिय लखन भालु कपि कटक साथ। लखि कृपा दृष्टि रघुवंश नाथ
मैं जानत सब तपसा प्रभाउ। उठि प्रात तात प्रभु फल जाउ
मुनि स्वल्प सलिल नहिं तृषा जाइ। वापी सर मोहिं दीजे बताय।

चौपाई

असुर जाय सर दीन्ह बताई ॥ चक्षु मीलि जल पीबहु जाई
पुनि उपदेश देउं तोहिं भाई ॥ जीवन औषधि जिमि दर साई
गयो मूंदि चख पीवत पानी । मकरी गहा चरण रिस आनी
ताहि तुरत कपि बदन बिदारा । मरते दिव्य रूप तेहि धारा ॥
तेहि सब कथा कपीशहि गावा । हतो असुर मग रोकन आवा ।
छलिहि विलोकि पवन सुत जाई । कहते मंत्र लेव किन आई ॥
गुरु दक्षिणा प्रथम तुम लीजे । बहुरि मंत्र उपदेशहि कीजे ॥
अस कहि मुष्टिक कठिन प्रहारा । युद्ध कियो तेहि निज तनु धारा
अस्त्र शस्त्र छल बल बहु माया । करत निशाचर युद्ध निकाया
छन महं सबै संहार कपीशा । बचे ते गये जहां दश शीशा

दोहा बहुरि कपीश क्षणार्द्ध महं द्रोणा चल लै दीन्ह
ज्यायो लक्ष्मण सैन सब युक्ति सुखेन सो कीन्ह
हरषि भेटि प्रभु पवन सुत बहु विधि गौरव दीन्ह
अनुजहि भुज भरि भेंटि पुनि निज उर शीतल कीन्ह

अथ पत्रिका मित्र को जो पथ में है

दोहा । गाधि तनय भगिनी सुअन तागुरु पत्नी जानि
(विश्वामित्र रेणुका परशुराम शिव पार्वती गणेश)
ता सुत बंदौ पद कमल जोरि जानु अरु पानि ॥
(लक्ष्मी विष्णु कमल ब्रह्मा सरस्वती)
सिंधु सुता पति तासु सुत तासुत सुता मनाय ॥
शंभु गौरि गुरु पद सुमिरि पत्री लिखत बनाय ।

स्वस्ति श्री सुखमा सदन विद्या गुण पर वीन ॥
विद्वज्जन मणि कृपानिधि परम आतमा दीन ॥

चौपाई

राखि धरणि ऊपर निज भाला। करत प्रणाम हजारी लाला॥
कृपा दृष्टि राखियो मो ऊपर॥ तुम पर रहैं सदा धरणीधर
जहां कुशल तव कृपा अपारा। वहां रहैं श्री शंभु उदारा॥
होत जाहि सुनि परमा नंदा। यथा चकोर निहारत चंद्रा॥
आगे समाचार अब गावत॥ सत्यहि द्विज वरतुमहिं सुनावत
विरह अनल लागी चहुं धाई। तृण वन भस्म करत समुदाई
ज्वाला शोक उठत बहुताई। लपट दुःख आकाश हिजाई
मन मृगाता भीतर भयखाई। भाजि भागि चहुं ओर न जाई
करत विचारन बनत बनावा। लख्यो उवार न काहू ठांवा॥
श्री हरि हरण तक्यो अकुलाई। कहि जय जयति जयति सुरसाई
जय देवकि सुत जय नंदनंदन। जय जय केशी कंस निकंदन।
जय जय मोहन जय बन वारी। जय राधा वर कुंज विहारी॥

दोहा जैसे गज को ग्राह सन बोरत लीन्ह बचाय॥
द्रुपद सुता की लाज जिमि रख्यो सभा विच धाय
तैसे ही प्रभु या समैं मेरो करो उवार॥ ॥
भस्म होय नहिं क्षणकमहूं चहुंदिशि लागि दवार
यहि विधि व्याकुल चित्त जब कीन्ही बहुत पुकार
दीन वचन सुनते प्रभू तुरते लगे गुहार॥ ॥

प्रलय घटा सम पत्र है ताक्षण पहुंचे आय ॥
सुख नीर वर्षायि तिन्ह दीन्हो सकल बुझाय
महा वृष्टि तत क्षण भई उमग्यो सागर सुख
ढाह बहाये मूल सह विटप करोर दुःख ॥
करौं बड़ाई कौन विधि तव पत्रन में तात ॥
भारति जिय संशय अधिक गण पति शेष सकात

छन्द

कहिये केहि भांति बयान करौं। नहिं जात तरो सुख सागर को
मति मोरि पपील समान अहै। गुण सागर रूप उजागर को
गुण गाय लहै जग पारजु ताहि भयो कवि ऐसे हु नागर को॥
कह लाल हजारि विचारि हिये उलचै दधि जो मुख गागरि को

छन्द

कछु यद्यपि गावत भाषि सुनावत हर्ष बढ़ावत है मति के अनुसारहि
दुख को जहं सागर बुद्धि उजागर आगर सो तव पत्र अगस्त विचारहि
मन मोर हुतो जहं मीन समान बिना जल व्याकुल चित्त खेभार अपारहि
तहं पत्र तुम्हार सुधा पति आय समान दियो अति आनंद लाल हजारहि

छन्द

चातक सम जान्यो चातक मान्यो मेरो मन यह सुख दाई ॥
पत्री तव स्वामी अहो संघाती मुद मंगल जल वर्षाई ॥
मन मोरे भाई है द्विज राई घटा रूप तव रवत आयो ॥ ॥
कह लाल हजारी हृदय विचारी महा नंद मन उपजायो॥

दोहा चतुराई जो तुम लिखी सबै जानि हम लीन ॥
होत ठठेर ठठेर नहिं कहुं बदलाई प्रवीन ॥
अधिक अहो सब बात में आप द्विजन शिरमोर
जिन बातन में हो अधिक सोउ सुनहुं करि गोर

कुंडलिया

शाला अहै नवीन मम डांक भवन पुनि दूर। शिशु बहु तातें अमित श्रम होत पत्र मति रूर। होत पत्र मति रूर आपु लेखो यह भाई। मेरो अब पुनि हाल सकल सुनिये चित लाई। कहत हजारी लाल अहो दीनन प्रतिपाला। अब हीं अहै कृपाल नई मेरिहु तो शाला ॥

दोहा लड़कों केर जमाव अब सुनिये मीत सुजान॥
दिक् चौगुन अरु एक पुनि वर्ज रज रुर जान॥
छोटे बालक अधिक पुनि अहैं पांच छः सात
अबहिं जानु वर्षा बिगत ऐहैं और हु तात॥
तुम्हरी कृपा प्रसाद ते अहै हाल यह मीत॥
मिलन नहीं रुख स्त लग मुहिं अवकाश पुनीत
यामिनि दल लौं होति पुनि वर्णन हरि हर गाथ
सुनन आवहीं ग्राम जन नित्य नियम यह गाथ

कुंडलिया

काहू दिन काहू समय नहिं अवकाशित भाव। ताती लहु दिन को बहुत लरिकन होत जमाव। लरिकन होत जमाव डांक

मंदिर पुनि दूरी। षट्क कोश तिहि गांव आपु ड्योढ़े मति रूरी।
कहत हजारी लाल सब हि विधि तुम बड़ आहू। पर नहिं बुद्धि रसाल बड़े दून बातन काहू॥ २॥
बाहाना तुम कीन्ह सो हम सब लीन्हो जान। अब चतुराई नहिं बहुत कीजे चतुर सुजान। कीजे चतुर सुजान नहीं ऐसी चतुराई। बनै बरा बर नाहिं बात कहु नाहिं बनाई। कहत हजारी लाल अहो गुण बुद्धि निधाना। पै हम लीन्ह तुम्हार बूझि सब ही बाहाना॥

दोहा। तुम को मोते कछु अधिक घाटि नहीं अवकाश
निशि सगरी नातील दिन साव काश पर काश
ताहूपर तुम नहिं लिखत मीत कबहुं खतपत्र॥
करत चतुराई पुनि अहो यह नहिं बात दकत्र॥
अहौं लिखत मैं पत्र किमि यद्यपि नहीं छुटकार
उचित यहै तुम को लिखत कीजे हृदय विचार
यह शिख मेरी मानियो सुनि लीजे दे कान॥॥
हर गिज़ हर गिज़ नहिं कियो चित्त अनत कहुं जान
कारण सकल निषेध कर सुनहुं मीत यह आहि
जान नहीं बाकी कछु शास्त्र पुराननि मांहि॥
यद्यपि जानत भली विधि मोको यहै यकीन
कैसिहु बिगरी होइ पुनि लेहु सुधारि प्रवीन।
पर मैं ताहू पर तुम्हें मनै करत सन्तान॥

पारस निर गुण रंक घर जिमि तिहि भांति बखान
गिल्ला लिखो जो आपने मम गुरु पत्री हाल ॥
कारण कौन लिख्यो नहीं सुनिये सकल कृपाल
तब पत्री अति शीघ्र मैं लिखी लखन पुर माहिं ॥
ताही ते संक्षेप अति वर्णो ब्योरा नाहि ॥ ॥
गद्य पद्य पत्री सकल दोहा छंद कवित्त ॥ ॥
सोरठ चौपाई कुंडलि अर्थ न गूढ़ रचित्त ॥
जासु शिष्य तुम अस कहैं तिन के खत की मीत
करौं बड़ाई कौन विधि करौ सत्य पर तीत ॥ ॥
भयो आजु लौ सो भयो अब आगे सुनि लेहु ॥
विनय मानि निज जानि जन लिख्यो पत्र करि नेहु
नख अरु मास मिलाय कर तातर ग्रह दिग युक्त १९३२
संवत् आश्विन पारव सित गज तिथि सुर गुरु भुक्त ४०

अथ फुट कर काव्य कवित्त ॥

अंध महा दश कंध हरी सिय राघव को घरता उर लाख्यो । एकहि आप दयो मुनि गौतम जानि कुकर्म के कर्मनि चाख्यो । शुंभ निशुंभ हते तरुनी अरु तारहि लागि वध्यो वर घाल्यो । जो समझै मन मैं शठ तू किन कोन गंयो पर वाम को घाल्यो ॥

कोऊ एक पंडित महा मदन की उमंग सों जाय पहुंचे वेश्या के भवन में । रूप रस वाय दीन्हों वस्तु सब आनि दीन्हों

ऐसी सुख चैन कीन्हों जैसे रमनी पुर गगन में। भोर होत चलत बाट वेस्या हंसि पूंछो बात हमैं तुम्हैं कबै भेद है है ऐसी सुख चैन में। जो पै वेद पुराण आगम सब सत्य है है तो हमैं तुम्हैं भेद है है कुंभी पाक भवन में॥

चौबोला छंद

सुर पति हित श्रीपति बामन है बलि भूपति सो छलहि च॰ हो। स्वामि काज हित शुक्र दान हूं रोक्यो दृग वरु हानि सहो। सुमति होत उपकार लाख हित तो झूठो कहत न संक गहो। पर अपकार होत जानि हित तो कबहु न सांचो बोल कहो॥

हिम ऋतु वर्णन बरवा छंद॥

हिमि ऋतु छिति मिति फैली जान सभाग
भानु कोन में पैठो तापत आग॥ ॥
हिम डर भे वे परदे परदे कोस॥ ॥ ॥
युग परदे बिच बैठे परदे पोस॥ ॥
सीत भीत भव आवत भरि तन जोस॥
बीर धीर धुर है गे परदे पोस॥ ॥
निशि पति हित तक सक बड़ तज तन गात
सिसिर सीत उर दिन पुनि सकुचत जात॥
सीत नृपति भय मानहुं नीति विचार॥
बीत राग जल डारे कारा गार॥ ॥

सोरठा होली बहार में

झोरिन मध्य अबीर लै अहीर एकत्र है ॥
गये जहां बल बीर कहत तीर होरी हरय ॥
जेहि पद नख ते गंगा निकसी शिव शिर पै धरी
सो व्रज बाल के संग चल्यो बाल व्रज की तकत

कवित्त

चलो ब्रज चंद चंद बदन सुचंद करे चंद राखे भूषन अनंग अं-
ग फबरे। कवि सरदार हेम वारी पिच कारी हाथ साथ कोर दोई
पै दिमाक दार दबरे। छूटे छुर कायल छबीले छैल छानी दा-
व अग्र भये जोम दार जेरी लिये जबरे। झोरिन में बोरिन
में प्रबल पिछोरिन में बांधि के अबीर भे अहीर संग
सबरे ॥

सोरठा

आवत सुने अहीर धारे चीर सुरंग वर ॥
चली राधिका तीर उमा क्षीर जासी सकल
आजु नंद को नंद पकरो रीछल छंद करि
सुचि सुखमा को कंद चंद्र चारु व्रज को विमल

कवित्त

कवि सरदार खोट कंज के करैया कोटि कोटि चंद वारों जाके
आनन अमंद पै। एकै संग संग भीर भंवर भगावै गावै एकै
का अहीर धावै छवि छकि छंद पै। एक ओर ललिता

विशाखा एक ओर घोर रंग लै अबीर की सो ताकत बुलंद पै।
। होरी खेलिबे को चली कीरति कुमारी मानो मालती मेलिबेको
चली सीता जू सुरामपै। धन कैसी धुमक धमक धूम ढोलन
की तैसे ही सुजान गान घूनो पिन्न पिकसो। झारसी लगा-
दै धार बार पिचकारी चारु चमक चलांक चंचला ज्यों चा-
उ चिकसो। केसरि ते कलित सुसाधा राधा आधा मुख
देखि सरदार श्याम उर वर विकसो। शोभा सुचि सरससु-
भाय सर साय ससी मानो गुरु गेह ते सनेह मानि निकसो। स्ने-
द की उमंग औ अनंग की तरंग चढ़ी भंग सी सुअंग कुच
शृंग में समान शैल। फरकि फरकि कान आन को दवावै न-
यन सरकि सरकि लर्द भूषन गमार गैल। ब्रजसरदार
कीस जोर मुख कान सर्व ओरते निहार हार फूटिगे फराक
फैल। जौ लौ सुकुमारी सारी सरकि मिहारै तौ लौ छीनि
पिचकारी गयौ छूटि के छबीलो छैल॥

सवैया

दारिद विदारिबे को प्रभु के तलास तौ हमार ह्यां अन गान
दारिद की खानि है। अघ की सिकारी जो है नजरि तिहा-
री तौ होतन बन पूरन अघना राख्यो ठानि है। दास निजु
संपति सु साहेब के काज आये होत हरषित पूरो भाग उन
मानि है। आपनी विपति को हजूर हो करत लखि राघवरे
को विपति विदारन की बानि है॥ १॥

पात फूल दातनि को देवे को अरथ धर्म काम मोक्ष चारों फल मोल ठहरावती। देख्यो दास देव दुर्लभ गति दैके महा पापिन के पापन को खूंदि ऐसी पावती। ल्यावत तर्क हू ते तन जात रूप कोऊ ताको जात रूप सैल ही को साहिबी सजावती। संगति मे बानी करे कितेक तुम बीस्यो देवि गंगा पै न सोदा की तरह तोहि आवती॥ २

आभरन साजि बैठो ऐठो जनि भौंहें लखि लालन कहे गो प्यारी कला जैसे चंद की। सुंदरि सिंगारन बनावे को बोलमे तिलोत्तमा सी ठहरै हो सी है मुख कंद की॥ दास वर आनन उदास तामे देखि कै कहे भी कमल सो है बानी नंद नंद की। योही परत जाति उपमा की पंगति हो संगति अजहु न जो मान मति मंद की॥

चंद चतुरानन चरवन के चकोरन के चंचरीक चंडीपति चित्त चोप कारिये। चहूं चक्र चारो युग चरचा विरानी चले दास चारो फलद चपल भुज चारिये। चोप दीजे चारु चरनन चित्त चाहिबे की चेरन को चेरी चीन्ह चूक न निवारिये। चक्र धर चकवे चिरैया के चढ़ैया चिंता चूहरी को चित्त ते चपल चूरि डारिये॥ ४॥

सारद नारद पारद अंग सी क्षीर तरंग सी गंग की धारसी। शंकर शैल सी चंद्रिका फैल सी सार सरेल सी हंस कुमारि सी। मनि राम प्रकासहि भाद्रि बिलास सी कुंद की कास-

सी मुक्ति भंडार सी । कीरति श्री हनुमान प्रसाद की राजति उज्ज्वल चमेली की हारसी ॥ ५॥

चौपाई

निज कृत जो मैं भाषा भाषी। सो मैं सब के आगे राखी ॥ बिगरी सबै सुधारैं सुख से । कटुक वचन न कहैं कछु मुख से एतनी विनय हमारी मानैं ॥ अपना ते लघु हम को जानैं मनी राम है नाम हमारा । ॥ संग्रह कीन्हों लघु विस्तार दोहा । षट दल षट दल नंद भू ऊर्जमास शनि वार

धनद त्रयो दशि अर्द्ध निशि ग्रंथ हि कियो तयार

सोरठा घर है नगर मोहान जाति मोरि भू देव है ॥

सुनिये चतुर सुजान अपना ते लघु मम गन व ३३

सम्पूर्णम्

सूचना

इस लघु ग्रंथ में जिन जिन कवियों की कविता है उन के नाम ग्राम पठन पाठन की व्यवस्था । श्री मान् पण्डित महेश दत्त जीने अपने ग्रंथ काव्य संग्रह में सब लिखा है तिस्से अध्यापकों को चाहिये कि कृपा पूर्वक अपने अपने विद्यार्थियों को बतादेवें और जो जो कठिन शब्द परे हैं उन को भी काव्य संग्रह में देख लेवें॥

इति शुभम्